अवतार भगवद्धाम् (परव्योम) में अवस्थित हैं। प्राकृत सृष्टि में उतरने पर ही उन्हें 'अवतार' कहते हैं।''

अवतारों की अनेक कोटियाँ हैं—पुरुषावतार, गुणावतार, लीलावतार, शक्त्यावेशावतार, मन्वन्तरावतार और युगावतार इत्यादि। इन विविध अवतारों का ब्रह्माण्ड में क्रमानुसार अवतरण होता है; परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण तो सम्पूर्ण अवतारों के उद्गम (अवतारी) आदिपुरुष ही हैं। भगवान् श्रीकृष्ण के अवतरण का विशिष्ट प्रयोजन उन शुद्धभक्तों की आर्ति का हरण और परितोषण करना है, जो उनकी आद्या वृंदावन-लीला के दर्शनार्थ सदा अतीव उत्कण्ठित रहते हैं। अस्तु, अनन्य भक्त का परिपोषण करना कृष्णावतार का प्रधान उद्देश्य है।

भगवान् का श्रीमुख वचन है कि वे युग-युग में अवतरण करते हैं। इस कथन से यह सत्य स्पष्ट झलकता है कि वे कलियुग में भी अवतार अवश्य लेते हैं। श्रीमद्भागवत में अनेक स्थलों पर कहा है कि कलियुग के अवतार श्रीश्रीगौरसुन्दर चैतन्यमहाप्रभु हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण भारत में संकीर्तन के रूप में श्रीकृष्ण की आराधना का और कृष्णभावनामृत का प्रचार किया। उन्होने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन यह संकीर्तन यज्ञ सम्पूर्ण विश्व में, एक-एक ग्राम-जनपद में प्रसारित होगा। उपनिषद्, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि प्रामाणिक शास्त्रों के गुह्य प्रकरणों में गुप्त रूप से श्रीचैतन्य महाप्रभु को भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार घोषित किया गया है। कृष्णभक्तों का तो श्रीचैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन यज्ञ के प्रति स्वयंसिद्ध आकर्षण है ही। इस महावदान्य अवतार में प्रभु दुष्टों का वध नहीं करते, वरन् अपनी निरुपाधि-निरवधि कृपा के द्वारा आपामर पर्यन्त सभी का भवसागर से उद्धार कर देते हैं।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।।९।।

जन्म=आविर्भाव; **कर्म**=क्रिया; **च**=और; **मे**=मेरे; **दिव्यम्**=दिव्य हैं; **एवम्**=इस प्रकार; **यः**=जो; **वेत्ति**=जानता है; **तत्त्वतः**=यथार्थ में; **त्यक्त्वा**=त्याग कर; **देहम्**=इस देह को; **पुनः**=फिर; **जन्म**=जन्म को; **न**=नहीं; **एति**=प्राप्त होता; **माम्**=मुझे ही; **एति**=प्राप्त होता है; **सः**=वह; **अर्जुन**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन! मेरा आविर्भाव और कर्म दिव्य है, इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व से जानता है, वह देह को त्याग कर संसार में फिर जन्म नहीं लेता, वरन् मेरे सनातन धाम को प्राप्त हो जाता है।।९।।

तात्पर्य

भगवद्धाम से श्रीभगवान् के अवतरण का प्रतिपादन छठे श्लोक में किया जा चुका है। श्रीभगवान् के आविर्भाव तत्त्व के मर्म को जानने वाला जीवन्मुक्त हो जाता है। अतएव अपनी प्राकृत देह को त्यागते ही वह तत्काल भगवद्धाम को गमन करता है। मायाबन्धन से जीव की यह मुक्ति सुखसाध्य नहीं है। निर्विशेषवादी एवं योगी